जहाँ शांति और आनंद नहीं वहां सब शून्य

महाभारत की कथा में एक प्रसंग बहुत ही मौलिक व समझ देने वाला है। कृष्ण और पाण्डव अनेक प्रयासों के बावजूद युद्ध को टाल न सके। संघर्ष अनिवार्य हो गया। ऐसा जानने के बाद कौरव और पाण्डव सगे-सम्बन्धियों के पास सहायता मांगने जाते हैं। युद्ध एक ही परिवार वंशज और पितराई भाईयों के बीच था। इसलिये एक तरफ दुर्योधन और दूसरी तरफ अर्जुन परिवार के बुजुर्ग और मित्रों को मिलने एवं उनसे सहयोग प्राप्त करने की भावना से जाते हैं।

कृष्ण के पास भी दोनों जाते हैं अनजाने में वे दोनो एक ही समय पर पहुँच जाते हैं। दोपहर का समय था भोजन के बाद श्रीकृष्ण आराम कर रहे थे। दुर्योधन जाकर कृष्ण के मस्तक के पास बैठ जाता है और अर्जुन कृष्ण के पैरों के पास। समय होते कृष्ण जागते हैं और उनकी पहली नज़र अर्जुन पर पड़ती है।

- ब्र.कु.गंगाधर

कृष्ण उनके आने का कारण पूछते हैं। तभी दुर्योधन कहता है कि मैं भी आपसे मिलने आया हूँ। कब से यहाँ मस्तक के पास बैठा प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

कृष्ण ने कहा-ठीक है, लेकिन पहले मेरी नज़र अर्जुन पर पड़ी है तो पहले उससे ही आने का कारण पूछ रहा हूँ।

अर्जुन ने कहा- निरंतर प्रयास करने के बावजूद युद्ध को रोक न सके इसलिये हम दोनों आपके पास सहायता के लिये आये हैं।

कृष्ण ने कहा-यह तो मैं समझ सकता हूँ परंतु आप दोनों एक साथ आये हो तो एक ही उपाय है कि एक मेरे सारे लश्कर और साजो सामान मांग ले और दूसरा मुझ निःशस्त्र को अपने साथ रखे। क्योंकि युद्ध में शस्त्र नहीं उठाने की मैंने प्रतिज्ञा की है। पसंदगी का अधिकार पहले अर्जुन को दिया गया इसलिये दुर्योधन मनोमन व्यथित हो गया और चिंता में पड़ गया कि अब क्या होगा? अवश्य अर्जुन कृष्ण की सारी सेना और साजो सामान मांगेगा। और मैं यह बाकी बचे हुए निशस्त्र कृष्ण को लेकर क्या करूँगा? वास्तव में मेरी भूल हो गई जो मैं उनके पैरों के पास नहीं बैठा। उठते ही उनकी पहली नज़र अर्जुन पर पड़ी और वह बाज़ी मार गया। यह तो अनायास ही हारने जैसा हो गया। लेकिन अर्जुन ने जो मांगा वो महा आश्चर्य का निर्माण करता है। अर्जुन ने कहा-यदि यही निर्णय है तो मैं आपको मांगता हूँ। बस आप एक हमारे साथ में होंगे तो हमें दूसरे किसी की ज़रूरत नहीं। दुर्योधन अर्जुन का यह निर्णय जानकर मन ही मन खूब हंसा। उसने सोचा ये लोग ऐसे के ऐसे मूर्ख ही रहे। हाथ में आई बाज़ी फिर हार गए। पहली बार शकुनी ने पासा फेंका तब भी हार गए। उस समय तो मेरी कूटनीति और चालाकी के सामने हारे लेकिन अभी तो वे अपनी मूर्खता से हारे हैं। ये लोग तो हारते ही रहेंगे। जीत शायद उनके नसीब में ही नहीं। सामने से मिला अवसर हार गया अर्जुन। अकेले कृष्ण को लेकर क्या करेगा? उनको खायेगा पीयेगा क्या? बिना हथियार के इस अकेले आदमी को साथ रखने से क्या मिलेगा?

लगता है कि पूरे युद्ध का निर्णय यहाँ ही हो गया। यहीं पल में महाभारत की हार-जीत निश्चित हो गयी। क्योंकि एक तरफ सारा संसार हो संसार की समस्त शक्ति हो तब भी अकेले कृष्ण को पसंद करना योग्य है। क्योंकि,

'इक साधे सब साधे, सब साधे सब जाये...।'

जो परमात्मा को पसंद कर उसे प्राप्त करने के लिए सारा संसार भी छोड़ दे तो भी विजय जरूर होती है। लेकिन ख्याल यह रखना है कि अर्जुन ने जीतने के लोभ के कारण कृष्ण को पसंद नहीं किया। हां, कृष्ण को पसंद करने से पाण्डव जीत गये यह दूसरी बात है। यह पसंदगी मात्र बुद्धि की नहीं है, गहरी समझ और विवेकपूर्ण निर्णय भी है। क्योंकि समझदार सदा शक्ति को नहीं, शांति को ही पसंद करता है। अपार शक्ति, अपार संपत्ति और अपार वैभव हो तो भी जहाँ शांति नहीं वहाँ सब शून्य है। ऐसी शक्ति कोई काम की नहीं है और भले ही अपार धन वैभव या शक्ति न हो तो भी जीवन में शांति हो तो यह अपनाने योग्य और अनुकरणीय है।

कृष्ण को पसंद कर अर्जुन ने शांति को पसंद किया है। साक्षीभाव और बोध पर अपनी पसंदगी को उतारा है। अबोध सारे

- शेष पेज 4 पर...

मन शान्त हो तब बुद्धि में ज्ञान की धारणा होगी

जो स्थिर है, अडोल है, अचल है तो नेचुरल है वो मधुर भी है। कभी मुख पीला लाल नहीं होता है। कुछ भी हो जाये इस प्रकार से अडोल-अचल रहने से जीवन में मधुरता आती है। अभी योग लगाना पड़ता है, कब लगता है कब नहीं लगता है। जब लगता है तो कहेंगे चलो आज अच्छा योग लगा, जब नहीं लगता है माना क्या? बुद्धि और कहीं गयी है। कब अपसेट हैं, नाराज हैं तो योग नहीं लगेगा या कोई इच्छा पूरी नहीं हुई है तो योग नहीं लगेगा। कंडीशन बहुत हैं। बाबा अनकंडीशनल लव देता है, पर कंडीशन डालता है तब देता है, जो उस कायदेनुसार चलता है उसको जी भर-भरके देता है।

तो अपनी स्थिति को देखना कि आसन के चारो पांव ठीक हैं? इसमें अचल अडोल हैं तो वाणी मधुर होगी। अगर थोड़ा चलायमानी डोलायमानी है तो वाणी और चेहरा कैसा होगा! बुद्धि को अंगद मिसल बनाना है, माया किसी भी रूप में कितना भी हिलावे पर हम हिलने वाले नहीं हैं। तो अन्दर ही अन्दर बाबा जो सिखा रहा है, सुना रहा है, बाबा के समझदार बच्चे हैं वो धारण करते रहते हैं। बाबा के एक-एक महावाक्य पर बहुत ध्यान रखते हैं। जरा-सा अपवित्र संकल्प है फिर वाणी में आया, कर्म में आया तो सारा काम खत्म। तो मुख्य बात है मन वाणी कर्म को ठीक करके चेहरे और चलन से सेवा करो। सूक्ष्म है मन, वह ऐसा राजा बन जाये जो अपनी स्थूल सूक्ष्म कर्मेंद्रियों को ऑर्डर में रखे, जो कर्मेन्द्रिय मन को कभी धोखा न देवें। नहीं तो दुख हो जायेगा क्योंकि यह शरीर वही है जिसमें आत्मा का मन पहले कर्मेन्द्रियों के वश था, आत्मा भी वही है लेकिन अभी आत्मा को यह ज्ञान मिला है कि आत्मा में मन बुद्धि संस्कार में पहला है मन। ज्ञान को बुद्धि में धारण करना है पर पहले मन शान्त हो तब तो बुद्धि धारण करे! जो संस्कार पुराने बदल जायें। तो गुप्त मेहनत है, अब यही पुरुषार्थ करना है कि पहले जो परचिंतन, परदर्शन, परदोष की आदत थी, अब वो नहीं करने का है। अंदर में यह हो कि मुझे बदलना है, बाबा का सुपात्र बच्चा बनना है, इस तरह के स्वचिंतन से स्वदर्शन होता है।

जिसे ब्राह्मण बनना व बनाना है, उसी को यह ब्रह्मा भोजन प्राप्त होता है। तो सच्चा ब्राह्मण माना सच्चाई, सफाई, सादगी हो। मनुष्य पहले ऐसा सच्चा ब्राह्मण बने तो देवता बने। देवताएं पूजे जाते हैं, ब्राह्मण पूजा नहीं कराते हैं क्योंकि ब्राह्मण तो सेवाधारी हैं। अभी हर एक अपने को देखे कि मैं कैसा पुरुषार्थ कर रहा हूँ, सतयुग में क्या बनूँगा? तो संगमयुग है पुरुषार्थ का युग, जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना सुखी रहेंगे। मुझे तो नशा है कि सारे जहान की आत्मायें मेरे बाप के बच्चे हैं, वो सब आत्मायें अच्छी बन जायें, यही मेरी भावना है। बाकी और कुछ नहीं है मेरे पास। विश्वास से निश्चय से जैसा बाबा बनाना चाहता है, ऐसे बाबा का सैम्पल बन जाऊँ। सैम्पल को देख सेवा हुई है। सैम्पल क्या है न दुख है, न भय और न ही चिंता वाली लाइफ है,कल क्या होगा, उसकी फिकर नहीं है, जो हुआ सो अच्छा, जो हो रहा है सो अच्छा। जो होगा बहुत अच्छा होगा क्योंकि अभी के अच्छे कर्म के कारण अन्दर से गैरन्टी से यह आवाज निकलता है कि अच्छा ही होगा। शिवबाबा ने ब्रह्मा के द्वारा हर कर्म कैसे करना है, वो बताया है, सिखलाया है। यह कर्मक्षेत्र है, जैसा बीज बोयेंगे ऐसे फल खायेंगे। तो कर्म इतना अच्छा करने से सुख मिलता है, दुआयें मिलती हैं, अच्छे कर्म करने वाले के खुशी के चेहरे से औरों की सेवा हो जाती है। तो ब्राह्मण कौन है? सेवाधारी। पहले त्याग, फिर तपस्या ऐसी जो एक बाबा दूसरा न कोई, फिर ऐसे सच्चे ब्राह्मण सेवाधारी बन दुनिया से दुख, अशान्ति, पाप, भ्रष्टाचार, झूठ और हिंसा को समाप्त करने की सेवा करो।

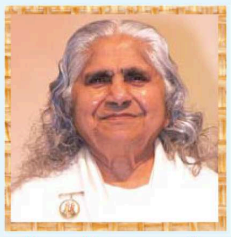

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

हर घड़ी को पुरुषार्थ के लिए अंतिम घड़ी समझें

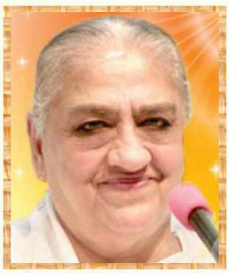

दादी हृदयमोहिनी,अति.मुख्य प्रशासिका

प्रश्न- दादी, पुरुषार्थ में आप कौन-सी बात पर ध्यान रख रही हैं?

उत्तर- अभी ध्यान रखते हैं कि थोड़ा समय है, अचानक ही कुछ भी हो सकता है और बाबा अचानक शब्द कितने समय से कहके हमको सावधान कर रहा है। हर बात में बाबा अचानक, अचानक कहके फिर बताता है तो जब अचानक शब्द बोलता है तो उससे हमको समझना चाहिए कि हमको एवररेडी रहना है। पुरुषार्थ करुँगी, यह देखूँगी... नहीं। सदा यही सोचना चाहिए कि जब अचानक सब होना है तो अचानक में हमको कितना एवररेडी रहना है। हमेशा समझें कि हमारे लिये यह अन्तिम घड़ी है। पुरुषार्थ की अन्तिम घड़ी, शरीर की नहीं। जितना पुरुषार्थ मैं अभी कर सकती हूँ वो पीछे करुँगी, यह नहीं। तो मेरे पुरुषार्थ की घड़ी ऐसी हो जो कभी भी अचानक अन्त हो तो तीव्र पुरुषार्थ का फल मिले। ऐसे नहीं उस समय सोच लेंगे, या पुरुषार्थ आज ढ़ीला है, कल तेज है। कभी भी अचानक कुछ भी हो सकता है इसलिये मेरे को ऐसे तैयार होना है, कभी भी कुछ भी हो लेकिन मेरी स्थिति जो है, बाबा जो कहता है वो तैयार है। जैसे अभी दादी जानकी हमेशा कहती है अचानक कुछ भी हो सकता है इसलिये मेरे को अटेन्शन रहता है कि यह हर घड़ी मेरी अन्तिम घड़ी है। अन्त में हम सोचेंगे, नहीं। लेकिन हर घड़ी अन्तिम घड़ी समझकर अपने को एवररेडी रखना है। कभी भी अचानक कुछ भी हो जाये लेकिन मेरे पुरुषार्थ की जो फाइनल स्टेज है, वो होनी चाहिए।

प्रश्न -जब आप छोटी उम्र में बाबा के पास आये तो आपने उस समय क्या अनुभव किया और बाबा ने आपमें क्या विशेषताएं देखी?

उत्तर- हम तो छोटेपन में ही बाबा के पास आ गये। तो पहले तो बाबा ने प्यार से देखकर, आओ बच्ची, प्यारी बच्ची ऐसे बोला तो मुझे लगा यह पहचाना हुआ है। बाबा से ऐसे नहीं लगा जैसे कोई आज ही हमें देख रहा है। ऐसे लगा कि बाबा पहचान करके कह रहा है और मैं भी जैसे भले पता नहीं था हमको बाबा होता कौन है, क्या होता है, फोटो भी नहीं देखा था लेकिन ऐसे हमको भी नहीं लगा कि आज पहली बार मैं इनको देख रही हूँ। बाबा को भी नहीं लग रहा था जैसे हमारे को नया देख रहा है, मिले हुए हैं ऐसे ही अनुभव हुआ। और बाबा जो बच्चा शब्द कहता था उसमें ही जादू होता था। उस समय बाबा ने बहुत उमंग से बच्चों के लिए पहली बार आध्यात्मिक बोर्डिंग खोला था और बच्चों का आह्वान किया। तो जब हम पहुँचे तो ऐसे लगा जैसे कोई हमको याद करता हो और याद से हम पहुँच गये हैं, ऐसे नया नहीं लगा जैसे बाबा हमको बुला रहा था और हम बाबा के पास पहुँच गये प्यार से। तो बाबा को देखते ही पहले प्यार की फीलिंग आयी। ऐसे लगा जैसे जन्म-जन्म का यही हमारा पिता है, ऐसे नहीं लगता था कि यह कौन है, कहाँ हम पहुँचे हैं! नया कोई नहीं लगता था, जिगर से लगता था यह अपना है। नहीं तो डर लगे कि पता नहीं इनके पास आये हैं क्या होगा, कैसे होगा... नहीं।

हमारे नयनों से बाबा ने भी अनुभव किया कि यह जैसे पुरानी है और ऐसे मिला जैसे बिछुड़ गये थे और मिले हैं आके। अगर ऐसी भासना आपको भी आवे कि बाबा हमारा है, हम बाबा के हैं, बाबा के ही रहेंगे। तो बचे रहेंगे, माया कम आयेगी। हमारे में बाबा दिखाई देता है तो यह तो बाबा की कमाल हुई ना। हम तो कहते हैं सवेरे उठके बाबा को देखो और सोते हुए बाबा को देखो, बीच में हर सेकेण्ड में मेरा बाबा, मेरा बाबा यह फीलिंग आये तो आपकी स्थिति हमारे जैसी बन जायेगी। बाबा को याद करने के तरीके बहुत हैं। कोई कहता है बाबा भूल जाता है, लेकिन कुछ नियम बनाने से वो भूलेगा नहीं। जैसे कि सुबह को उठो बाबा को गुडमार्निंग करो। नाश्ता करो बाबा को खिलाके पीछे खाओ, मतलब कोई भी काम करो पहले बाबा को याद करके कोई काम करेंगे तो सफलता आपको सहज प्राप्त होगी। तो बाबा को भूलने की तो मार्जिन ही नहीं है। कोई भी काम करो पहले दिल में बाबा को रख दिया, दिल में बाबा समाया हुआ है, तो दिल वाली बात तो कभी भूलती नहीं है। जैसे दिल में अगर कोई खराब बात आती है तो वह भी भूलती नहीं है। हम भूलते नहीं हैं। हम चाहते नहीं हैं तो भी वो बात दिल से निकलती नहीं है, बार-बार याद आती है। तो बाबा को दिल में समाया है तो वो कैसे निकल सकता है, कैसे भूल सकता है? बाबा कम्बाइण्ड हो गया ना, हम कभी भी बाबा के बिना अकेले नहीं हैं, बाबा हमारे दिल में है ही है। दिल में है माना साथ है ना। दिल में अगर दूसरी बातें आती हैं तो बाबा को निकालते हैं क्या? बाबा तो समा गया है। बाबा कहता है अकेले नहीं बनो, मेरे साथ कम्बाइण्ड रहो। अकेला देखकर माया दुश्मन वार करेगी, लेकिन कम्बाइण्ड है तो माया आ नहीं सकती।